डॉ सुषमा देवी,
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी), भाषा विभाग,
भवंस विवेकानंद कॉलेज, तेलंगाना

समाज की अभिवृध्दि में भारतीय साहित्य का अवदान

शोध सार :

विश्व की किसी भी भाषा के लिखित स्वरूप को साहित्य के नाम से जाना जाता है | साहित्य शब्द स्वयं में अत्यंत व्यापक अर्थ को समाहित किए हुए है | जो साहित्य शिवत्व के उद्देश्य को लेकर रचा जाय, वह उत्तम माना जाता है | इस नादमय सृष्टि के पवित्र स्वर से झंकृत साहित्य की निर्मल धारा में मानवता स्नान करती हुई सदैव निखरती रही है | आरंभिक साहित्यिक रचनाओं को कविता के रूप में देखा जा सकता है | आगे चलकर साहित्य वाङ् मय के रूप में विकसित हुई | मानव जाति के जीवनानुभव, चिंतन-मनन तथा आत्म-विश्लेषण से जो ज्ञानचक्षु खुलते हैं, उसे मौखिक या लिखित रूप में अभिव्यक्ति पाने के बाद साहित्य के नाम से अभिहित किया जाता है | मानव जाति के द्वारा अक्षरों के उच्चारण सीखने में ही लाखों वर्ष लग गए | ध्वनियों को मौखिक से लिखित स्वरूप प्रदान करने में पुनः वर्षों लग गए | समस्त वैदिक साहित्य वनस्पति, जीव-जंतु एवं प्रकृति-पूजन से सम्बध्द है | साहित्य का सर्वोत्तम लक्षण उसकी शाश्वतता होती है | मानव सभ्यता के विकासक्रम में लगभग सभी देशकाल एवं भाषाओँ में साहित्य की सर्जना हुई है | एक उत्तम साहित्य समाज की विकास गति को नियमित करने का कार्य करता है |

मानव समाज की अभिवृध्दि में भारतीय साहित्य का अमूल्य योगदान रहा है, जो साहित्य युग धर्म से च्युत हो गया, निश्चित रूप से वह सुरसरि की गरिमा से च्युत होकर मानसूनी वर्षा की तरह ही अपना महत्त्व रखता है | साहित्य की शाश्वतता देश, काल, समाज में प्रतिष्ठा पाने में है | साहित्य में नवजीवन के निर्माण की क्षमता होती है | साहित्य की यही मानवतापोषी रूप उसे कालजयी स्वरूप प्रदान करती है | रामायण, महाभारत, भगवतगीता, पुराण तथा उपनिषद् आदि सृष्टि की मंगल कामना के निहितार्थ सृजित साहित्य है |

बीज शब्द:

सत्य,समाज,शिवत्व, युगधर्म, कालजयी, शाश्वतता, महाभारत, रामायण, ब्रह्माण्ड, विराट,कर्मयोग आदि |

शोध संधान

साहित्य की रचना समाज में होती है | रचनाकार समाज में रहकर अपने भावों को आकार देता है | समाज से विषय लेकर समाज के अंधकार को दूर करके उसे प्रकाशित करने का कार्य एक साहित्यकार ही करता है | साहित्यकार व्यक्ति ही नहीं, अपितु समाज का भी मूल्य निर्धारित करता है | समाज के निर्माता की भूमिका में साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान होता है | आचार्य निशांतकेतु ने मनुष्य के द्वारा ध्वनि के निर्माण के सन्दर्भ में बड़ी सटीक व्याख्या की है | 'मनुष्य ने मानवेतर पशु-पक्षियों को बोलते हुए देखा –सुना और उसका दीर्घकालिक अनुसरण भी किया है | xxxx इस अनुकरणधर्मिता के कारण मनुष्य ने ध्वनि के सम्पूर्ण उच्चार्यमाण अक्षरों को आविष्कृत कर लिया है |'1

साहित्य का पहला स्वरूप वाचिक रुप में समस्त संसार में प्राप्त होता है | किन्तु जब हम साहित्य की विवेचना की ओर अग्रसर होते हैं, तो हमें लिखित साहित्य की ओर ही दृष्टि डालनी पड़ती है | पश्चिमी विद्वान् स्काट जेम्स ने साहित्य के संदर्भ में कहा है 'Literature is the comprehensive essence of the intellectual life of a nation xxxxxxx 'साहित्य किसी राष्ट्र के बौध्दिक जीवन का व्यापक सार है |'2 भारत की बहुभाषिक संस्कृति स्वयं में अपना एक वृहद् इतिहास समेटे हुए है | भारतीय भाषाओं के साहित्य की विशिष्टता उनकी अनूठी पहचान के रूप में सामने आती है | उत्तर भारतीय भाषाओं के पंजाबी , सिंधी, उर्दू और हिंदी के अलग-अलग साहित्य रचनागत विशेषता के कारण सर्वथा भिन्न हैं | इसी तरह से मराठी, गुजराती भाषा के साहित्य अपने जीवनगत विविधताओं के साथ उस भाषा के साहित्य में अभिव्यक्त हुए हैं | जब हम बांग्ला, असमिया तथा उड़िया साहित्य पर दृष्टिपात करते हैं, तो बांग्ला साहित्य की प्रखरता के बावजूद भी असमिया और उड़िया प्रचुर मात्रा में प्राप्त होते हैं | दक्षिण भारतीय चारों भाषाओं के साहित्य का उद्गम स्रोत एक होते हुए भी ये अपनी भाषिक, साहित्यिक विशिष्टता को अभिव्यक्त करते हैं | तमिल का 'संगम साहित्य' हो अथवा तेलुगु का 'अवधान साहित्य' समाज के मध्य से ही अपने विषय उठाते हैं | मलयालम की 'मणिप्रवालम' तथा 'किलिप्पाट्टू' शैली में 'सन्देश-काव्य' की रचना उसके भाषिक साहित्यिक अवदान को स्पष्ट करते हैं | गुजराती के 'आख्यान' एवं 'फागु' , मराठी के 'वोवाड़े' , असमिया के 'बरगीत' अथवा 'बुरंजी साहित्य', उर्दू के ग़ज़ल तथा पंजाबी के 'रम्याख्यान' तथा 'वीरगीत' आदि अपने मौलिक स्वरूप में सामाजिक अभिवृध्दि को पुष्ट करते हैं |

साहित्यकार सोए हुए समाज को जगाने वाला समाज का सजग प्रहरी होता है | बिहारीलाल जैसे कवि ने अकर्मण्य राजा जयसिंह को अपनी काव्य पंक्तियों के द्वारा कर्मोंमुख कर दिया था | साहित्य को अति उच्चतम स्थान पर स्थापित करने वाले संस्कृत के आचार्य भर्तृहरि ने साहित्य, संगीत तथा कला विहीन मानव को पूँछ विहीन पशु के सामान कहा है | समाज आज भी अपनी संस्कृति, विचार, परम्परादी का मार्गदर्शन साहित्य से प्राप्त करता है | 'समाज की विविध प्रकार की गतिविधियों का ही साहित्य में अंकन किया जाता है | देश, जाति, राष्ट्र, समाज तथा विश्व की उन्नति में साहित्य महत्वपूर्ण साधन का कार्य करता है |'3

यदि भारतीय साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में साहित्य की बात आरंभ करते हैं, तो देखते हैं कि भारतीय वैदिक साहित्य का विषय मात्र भारतीय समाज ही नहीं, अपितु समस्त मानव समाज तथा उससे आगे बढ़ कर ब्रह्मांडीय अभिवृध्दि हेतु रचे गये हैं | सुभाषितानि, हितोपदेश, पंचतंत्र, रामायण तथा महाभारत तथा पुराण आदि साहित्य समाज के मध्य से सामाजिक विषयों को लेकर उसी समाज के कल्याण के निमित्त रचे गए हैं | हजारी प्रसाद द्विवेदी ने साहित्यकार के सामाजिक सरोकार को ध्यान में रखते हुए दिनकर को केंद्र में रखकर कहा है – ''दिनकर' की उमंग और मस्ती में सामाजिक मंगलाकांक्षा का प्राधान्य है | 'हुंकार' में कवि सामाजिक

विषमताओं से बुरी तरह आहत है | xxxxउसका मन व्यक्त रूप में मस्ती और मौज का उपासक है, शहर की चिंता में दुबले होने वालों से अलग रहना पसंद करता है | किन्तु उसके भीतर अव्यक्त और अलक्षित रूप से सामाजिक चेतना का वेग है | वह समाज की चिंता छोड़ नहीं पाता |’4

साहित्य के माध्यम से सत्य के संधान कार्य को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है | एक उच्चकोटि का साहित्य जीवन की सारी कुहाँसा को छाँटने में समर्थ होता है | साहित्य सामाजिक अभिवृध्दि में प्रत्येक देशकाल में सहायक रहा है | भगवतगीता का सृजन महाभारत युध्द आरम्भ होने से पूर्व हुआ था | युध्द से पूर्व जब अकर्मण्यता ने अर्जुन को घेर लिया था तथा वे अपने कर्म से दूर हट रहे थे, तो कर्म के विराट स्वरूप को महर्षि वेदव्यास के द्वारा साहित्यिक स्वरूप प्रदान किया गया था | ‘साहित्य का आत्मसत्य’ नामक कृति में निर्मल वर्मा का यह वाक्य यहाँ उल्लेख्य है –‘जिस तरह अर्जुन अपनी ‘मिनियेचर’ दुनिया से उठकर हठात असंख्य सूर्यों, सृष्टियों, युगों से साक्षात् करता है और उस असाधारण अनुभव के परिप्रेक्ष्य में अपनी क्षुद्र पीड़ाओं और शंकाओं से मुक्ति पा लेता है, क्या हम ऐसा शेक्सपियर, तोल्स्तोय, और प्रूस्त के उपन्यासों में महसूस नहीं करते मानो घोर निविड़ में हमें कोई ऐसे सत्य का सूत्र मिल जाता है , जो भ्रांतियों के कुहरे को छाँट देता है और फिर हम इसी जीवन में एक नए अंतर्लोक की किरण पा लेते हैं |’5

ऐसी बात नहीं है कि मात्र भारतीय साहित्य में ही सामाजिक अभिवृध्दि के प्रयत्न हुए हैं, अपितु विश्व साहित्य में भी इसकी भूमिका कमोवेश इसी प्रकार रही है | नेपोलियन के द्वारा यूरोप में जिस प्रकार की विध्वंसक स्थितियों को जन्म दिया गया, उसे वहाँ के साहित्यकार बीथोवन ने बड़ी प्रभविष्णुता के साथ अपनी कविता में प्रकट किया था | शाश्वत साहित्य मानवता के विकास के पोषक होते हैं | अतः साहित्यिक रचनाओं को वर्ग, क्षेत्र तथा काल के अनुसार समयबध्द नहीं कर सकते हैं | साहित्य का यही कालातीत स्वरूप उसके महत्त्व को सार्वजनिन बनाता है | यदि हम साहित्य की सृजनभूमि का वर्गीकरण करेंगे, तो यह स्वतः स्पष्ट हो जाएगा कि ‘महाभारत’ में ‘भगवतगीता’ तथा श्रुतियों में पशु-पक्षी-प्रकृति चित्रण तथा मानव जीवन नियमन को अत्यंत सहजता के साथ प्रकट किया गया है | उपनिषदों में कहानी- कथाएँ हो अथवा यूरोपीय साहित्य में दांते के ‘द डिवाइन कॉमेडी’ तथा गोएटे की ‘इलेक्टिव एफेनिटिज़’ जैसी रचनाओं में समग्रता की भावना की ही अभिव्यक्ति हुई है | डॉ शुभदा वांजपे अपनी शोधात्मक कृति ‘हिंदी साहित्य: एक दृष्टिकोण’ में लिखती हैं- ‘ अपने समाज, परिवेश और प्रकृति के बीच रहते हुए भी व्यक्ति समाज से निरपेक्ष और कटा हुआ है | ऐसा जीवन जीने वाले साहित्यकार की जब अपने समाज, परिवेश से आत्मीयता नहीं तो उनकी रचनाओं में मानव जीवन के विभिन्न चित्र और चरित्र , भाव और राग , जीवंत भाषा और शिल्प कहाँ से आये?’6

समाज के विकास क्रम में मानव की शक्ति सम्पन्नता जितनी बढ़ती गयी, उनके विकास-चरण के स्रोत उतने ही संदिग्ध एवं आभाहीन होते चले गए | वर्तमान मानव स्वयं निर्मित होने का दंभ भरता है, लेकिन मानव की अपूर्णता परस्पर निर्भरता का मार्ग प्रशस्त करती है | साहित्य की साधना में ही सामाजिक अभिवृध्दि की सिध्दि समाहित है | लोकनायक कवि तुलसीदास ने अपनी कृति ‘रामचरित मानस’ के बालकाण्ड में कवि ने लिखा है- ‘कीरति भनिति भूति भलि सोई| सुरसरि सम सब कहँ हित होई ||’7

रामायण एवं महाभारत ऐसा साहित्यिक समुद्र है, जहाँ से समस्त भारतीय साहित्यिक नदियाँ निकलती हैं | रामायण में आदर्श की पराकाष्ठा है , तो मानव स्वभाव की समग्रता में विवेचना भी हुई है | देश ही नहीं विदेशों में भी रामायण में चित्रित उच्च मानवीय

मूल्यों के दिग्दर्शन किए जा सकते हैं | पंचम वेद 'महाभारत' मानव जीवन के महाकाव्य के रूप में सामने आता है | देश, काल की सीमा से परे यह ग्रंथ सार्वदेशिक, सार्वकालिक तथा प्रासंगिकता की दृष्टि से आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण है | ये साहित्य मनोरंजन के साथ ही मानव जाति को जीवन विकास की घुट्टी पिलाते हैं | मानव जीवन दृष्टि के विस्तार में इनका उल्लेखनीय योगदान रहा है | चार पुरुषार्थों की स्थापना में महाभारत का श्लाघनीय योगदान रहा है | जीवन के लिए उपयोगी धर्म, दर्शन तथा राजनीति आदि विषयों की जैसी शिक्षा इस कृति से मिलती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है | भगवतगीता में निहित निष्काम कर्मयोग सिध्दांत की जैसी व्याख्या की गयी है, मानव को अपने सम्पूर्ण जीवन के सन्दर्भ में उठने वाले प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं | 'कर्मयोग', ज्ञानयोग', भक्तियोग की त्रिवेणी में मानव जब चाहे स्नान करके मोक्ष प्राप्ति हेतु स्वतंत्र है | 'पौराणिक रचनाओं में कल्पना का संसार इस तरह से बुना गया है कि उसमें मानव , प्रकृति तथा भूमंडल के विषय स्वतः ही समाहित हो गए हैं | इन पौराणिक ग्रंथों में भारत के तीर्थ, व्रत ही नहीं बल्कि इतिहास, राजनीति और संस्कृति भी चित्रित किए गए हैं |

यह बात सर्वविदित है कि भाषा मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है और साहित्य भावों के माध्यम से मानवता को प्रसारित करती है | साहित्य बुध्दि, विवेक के परिमार्जन के साथ ही संवेदनाओं को भी पुष्ट करती है | मानव जीवन के सम्पूर्ण प्रक्रम आनंद की प्राप्ति के लिए किए जाते हैं | जिस साहित्य में समाज का यथातथ्य वर्णन किया जाता है | परिवर्तन , परिवध्र्दन और तात्कालिक स्थितियों के समर्थन में रचे गए साहित्य में से वही साहित्य शाश्वत बनता है , जो शिवत्व की भावना से आपूरित होता है | 'कला कला के लिए' अथवा 'कला समाज के लिए' जैसी विचारधाराओं में कला समाज के लिए ही विचार अमर होते हैं | केशवचंद्र की कृति 'रामचंद्रिका' और तुलसीदास के 'रामचरितमानस' का आधार ग्रंथ एक ही होने के बावजूद भी दोनों कृतियों की सामाजिक उपादेयता सर्वज्ञात है | सहस्र वर्षों पूर्व के भारतीय साहित्य में तात्कालिकता के वशीभूत होकर युध्दोन्मादी वातावरण में वीरता और श्रृंगार के भावों का पोषण होता रहा | समाज को देने के लिए साहित्य के पास बहुत कुछ होता है | साहित्य का विषय कल्पना , यथार्थ , आदर्श अथवा किसी भी विचारधारा से संबध्द हो, उससे समाज को कुछ न कुछ अवश्य मिलता है | श्यामाचरण दूबे के शब्दों में – 'भारतीय समाज बहुत पुराना और अत्यधिक जटिल है | लगभग पाँच हज़ार वर्षों की अवधि इस समाज में समाहित है | इस लंबी अवधि में विभिन्न प्रजातीय लक्षणों वाले और विविध भाषा-परिवारों के अप्रवासियों की कई लहरें यहाँ आकर इसकी आबादी में घुलमिल गयीं और इस समाज की विविधता, समृध्दि और जीवंतता में अपना-अपना योगदान दिया |'8

साहित्य को पढ़कर साहित्यिक रचना के समस्त स्वरूप को अनुभूत किया जा सकता है | क्योंकि साहित्यकार समाज का पहरेदार होता है | इसके साथ ही साहित्यकार अपने युगगत विचारधाराओं की गति का अवलोकन करते हुए युगीन समस्याओं को साधते हुए उसका समाधान भी प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है | विजयेंद्र स्नातक के शब्दों में – 'कवि या लेखक अपने समय का प्रतिनिधि होता है, उसे जैसा मानसिक खाद मिलता है, वैसी ही उसकी कृति होती है | वह अपने समय के वायुमंडल में घूमते हुए विचारों को मुखरित कर देता है | ' 9

भारतीय साहित्य में सामाजिक समरसता की भावना कमोवेश सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में दिखाई देती है | जीव-जंतु ,वनस्पति , पशु-पक्षी तथा मानव के कल्याण के निमित्त भारतीय साहित्य की भावधारा प्रवाहित होती रहीहै | साहित्य भारतीय हो अथवा विश्व का कोई भी साहित्य, वह शाश्वतता एवं सार्वदेशिकता तथा सार्वकालिकता की सीमा में तभी पहुँचता है, जबकि

उसमें सत्यम,शिवम तथा सुंदरम की भावना समाहित हो | उच्च मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना साहित्य रचना का परम लक्ष्य होता है |

सन्दर्भ सूची :

1. निशांतकेतु, आचार्य, समकालीन हिंदी निबंध , पृष्ठ-56
2. सक्सेना,डॉ. भुवनेश्वरी चरण, आधुनिक हिंदी निबंध , पृष्ठ-14
3. सक्सेना,डॉ. भुवनेश्वरी चरण , आधुनिक हिंदी निबंध,पृष्ठ-15
4. द्विवेदी , हजारी प्रसाद , हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास , पृष्ठ- 251
5. वर्मा, निर्मल, साहित्य का आत्म-सत्य, पृष्ठ- 36
6. वांजपे,शुभदा ,डॉ., हिंदी साहित्य: एक दृष्टिकोण, पृष्ठ- 182
7. गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकाण्ड , चौपाई-5
8. दूबे, श्यामाचरण, भारतीय समाज , अनुवादक-वंदना मिश्र, पृष्ठ-1
9. स्नातक, विजयेंद्र, विचार के क्षण, पृष्ठ-13